

# मन्दर बिरो- झारखंड राज्य की पारंपरिक चिकित्सा

1 धवड़ (*Woodfordia fruticosa* Kurz. )



धवड़ के फूल और पत्ते मुख्य उपयोगी भाग होते हैं।

अंग्रेजी- Fire flame, Bush, Chiranjit;

बंगाली- दवड़, धाड़ फुल;

गुजराती- धावड़ी, धावदिना ;

हिंदी- धातकी, धातू, धौरा, धवड़, धवल;

कन्नड़ - टमरापुष्पी;

मलयालम- टटिरिपुष्पी;

मराठी- धायफुल, धायटी, धावड़ा;

उड़िया- धोबो, जलिको, हरवरी;

संस्कृत- अग्निज्वाला, धातकी, धौरि;

तमिल- धाथारी-जागरी, धात्तारी;

तेलुगू- धातकी ;

तिब्बत- धा-ता-के, मे-तोगड़ा तक कि ;

**मुख्य रासायनिक घटक:**

टैनिन, फ्लेवोनॉयड्स, एंथ्राक्वीनॉन, ग्लाइकोसाइड, पोलिफेनॉल, ओइनॉथिन ए, वुडफोर्डिन सि, वुडफोर्डिन एफ, आइसोसकिमावलिन ए, ओक्टाकोसानॉल, बीटा-सिटोस्टेरोल, इलाजिक एसिड।

पारंपरिक उपयोग-

- रासायनिक पदार्थ - वुडफोर्डिन सि, ट्युमर को रोकता हैं।
- आपातकालीन कट जाने पर ताजे फूलों का पेस्ट का इस्तेमाल रक्त प्रवाह और संक्रमण को रोकने के लिए किया जाता है। ताजा धवड़ फूल न मिलने पर सुखे फूलों का उपयोग भी किया जा सकता है।
- खुले घाव पर धवड़ फूल का उबाल पानी या तेल या पाउडर लगाने पर जीवाणुरोधी गुण पाए जाते हैं।
- जटिल घाव पर धवड़ फूल और लोध का छाल बराबर मात्रा में लेकर उपयोग करें।
- पेट की समस्याओं व डिसेंट्री हो जाने पर धवड़ फूल के साथ अदरक डालकर काढा बनाकर पीएं। एक कटोरी दही में एक चम्मच धवड़ फूल पाउडर मिलाकर खाने से आंतरिक रक्तस्राव में उपयोगी है।
- बुखार होने पर धवड़ के पत्तियों का काढा पीएं जिसमें मिठास के लिए चीनी और सोंठ मिलाएं। शरीर को ठंडा करते हुए तापमान सामान्य करने में मदद करता है साथ ही बॉडी टॉनिक का काम करता है।
- धवड़ पौधे का उपयोग विशेष महिलाएं विकारों जैसे ल्युकोर्रहिया, डिसमेनोरहिया के लिए बहुत लाभकारी है।
- धवड़ के फल को भी टॉनिक के रूप में खाया जा सकता है।
- शोध में यह पाया गया है कि अगर धवड़ फूल का रस या सार 21 दिनों तक लगातार सेवन करे तो यह फास्टिंग शुगर स्तर को कम करता है और डायबिटीक चुहों पर इंसुलिन स्तर को बढ़ाता है।
- सुखे फूलों का मेथानॉल और पेट्रोलियम एक्सट्रेक्ट ( सार) जॉक (Pheretima posthuma ) के विरुद्ध काम करता है।

- धवड़ का सेवन अस्थि मज्जा (बोन मैरो) का तीव्र वृद्धि व उत्तेजित करता है । साथ ही शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को दुरुस्त रखने में सहायक है।

## 2. कचनार ( *Bauhinia purpurea* )





झारखंड के स्थानीय भाषा में कचनार को कोइनार कहते हैं और इसके फूल को 'टुंपा' कहते हैं। मुनगा के जैसे इसके नई पत्तियां और फूल दोनों खाया जाता है।

अंग्रेजी- Purple Orchid tree, Butterfly tree, Pink Butterfly tree, Purple baubinia;

असमिया - ओग-यॉक , कुरियल ;

बंगाली- कोइरल ;

हिंदी- कनियर, कचनार ;

कन्नड़ - कंचुवाल , कांचीवाला, कंचाला, कैंगानचाला ;

मनिपुरी- चिंगथराव गेंगलेइ- नाबा ;

मराठी- रक्त कंचन ;

मिजो- वाउ-फ-वांग ;

तमिल- नीलट्टीरुवट्टि;

संस्कृत- देवकंचन

### मुख्य रासायनिक घटक:

ग्लाइकोसाइड, सैपोनिन, फेनोलिक, टैनिन, फ्लेवोनॉयड्स, फैट्स, प्रोटीन, फ्लेवोन ग्लाइकोसाइड, फैटी एसिड, टोकोफेरॉल, कार्डियक ग्लाइकोसाइड, कार्बोहाइड्रेट, एल्कालायड, स्टेरॉल, स्टेरॉइड, फ्लेवोनॉन, ल्युटिन, बीटा सिटोस्टेरोल आदि ।

पारंपरिक उपयोग -

- कोइनार वजन घटाने, कीड़ा संक्रमण, अल्सर विरोधी, न्युरो रक्षात्मक गतिविधियों में सहायक है।

- कोइनार का सेवन भुख बढ़ाता और शरीर की पाचन ज्वाला व मेटाबॉलिज्म में सुधार लाता है। अत्यधिक मासिक रक्तस्राव, पाचन और हाइपो-थाइराइड को संतुलित करने के लिए कोइनार पाउडर ¼ या ½ चम्मच लेकर पानी या मधु के साथ लिल जाएं दिन में एक से दो बार उपयोग करें।
- कोइनार का काढा पीने से डायरिया से राहत मिलती है। काढा का तीन- चार चम्मच में बराबर मात्रा में पानी डालकर पिएं। खाना खाने के बाद पिएं या दिन में एक से दो बार पिएं।
- कोइनार का उबाल पानी सुजन और घाव ठीक करने में मदद करता है।
- कोइनार स्तम्भक प्रवृत्ति होने पर फुंसी- मुहांसे ठीक करते हैं और चेहरे पर से तेल व धुल हटाने के लिए उपयोगी है। इसका इस्तेमाल करने के लिए कोइनार पाउडर का पेस्ट फुंसी- मुहांसे वाले स्थान पर सप्ताह में दो से तीन बार लगाएं।
- सुखी डालियों का राख का उपयोग मसुदों में मालिश करें दर्द और सुजन को कम करता हैं।
- कोइनार से कोई साइड इफेक्ट नहीं होता है।

### 3. कुदरूम (*Hibiscus sabdariffa*)



अंग्रेजी- Roselle, Hibiscus Jamaica sorrel, Red sorrel;

असमिया - चुकियर, तेंगामोरा ;

बंगाली- चुकर ;

हिंदी- लाल अंबारी ;

मलयालम- पोलेचि, पुली-चेरा ;

मनिपुरी- सिलो-सोगरी;

मराठी- लाल अंबारी ;

मिजो- लेखर-अंधुर;

संस्कृत- अंबस्थाकि;

तमिल- सिमाइक्कसुरु, सिवप्पुक्कसुरु ;

### मुख्य रासायनिक घटक:

पॉलिफेनॉलिक यौगिक: नियोक्लोरोजेनिक अम्ल, क्लोरोजेनिक अम्ल, क्रिप्टो-क्लोरोजेनिक अम्ल, कैफियोल शिकिमिक अम्ल और फ्लेवोनायड्स; क्वरसेटिन, कैम्पफेरॉल व डेरिवेटिव, हिबिस्कस एसिड- विटामिन सी, ग्लुकोज कम मात्रा में मौजूद होती हैं।

फुल एंथोस्यानिन से भरपूर होते हैं, सुखे कुदरूम में (बाहरी आवरण) फ्लेवोनायड्स - गोस्सिपेटिन, हिबिस्सेटिन , सेबडेरटिन ; बीज में गामा- टोकोफेरॉल पाया जाता है।

पारंपरिक उपयोग -

- कुदरूम का काढा या चाय हृदय के मरीजों के लिए लाभदायक है।

- शोध में पाया गया है कि जिन हृदय के मरीजों ने कुदरुम पेय का न्यूनतम मात्रा में रोजाना सेवन किया उनमें कोरोनारी हृदय की बीमारियों में 22% की कमी और दिल का दौरा में 41% की कमी देखी गई है।
- कुदरुम का जलीय सार और एथेनॉल सार में ऑक्सीकरण रोधी और जीवाणुरोधी गतिविधियां पाई जाती हैं।
- सिरदर्द, कफ, घाव, कई चर्म संक्रमण के लिए कुदरुम को खाने में शामिल करें।
- कीटनाशक, अवांछित पौधे नाशक के लिए भी कुदरुम का स्प्रे उपयोग किया जाता है।

4 सनई ( *Crotalaria juncea L.* )



(Source- Wikimedia.org)

संताली - ससि सोन, सोन कुदरुम

अंग्रेजी- Brown hemp, False hemp, Indian hemp, Sunn hemp ;

बंगाली- शान ; डोगरी- ;

गुजराती- शन;

हिंदी- बिछुआ, दीर्घपल्लव, जनब, मातुलानी, पटसन, सनई ;

कन्नड़ - पुंडी;

कोंकणी- धाकटी धागरी, सन, सोणबु ;

मलयालम- चनम चनक;

मनिपुरी- उ-हवइ;

मराठी- धाकटी धागरी, सन, ताग;

मिजो- तुम-थंग ;

नेपाली- छिनछिने , सनई;

उड़िया- अटसी, छनपत्ता, समबत, शन, शनपुष्पी ;

संस्कृत- अटसी;

तमिल- कनल, कटंपु, कोनि-पी-पुट्ट , कुट्टिरम, कुट्टु, मनसि;

पंजाबी - सन, सनी

### मुख्य रासायनिक घटक:

कार्बोहाइड्रेट , स्टेरोइड, ट्राइ टरपिन्स, फेनोलिक, एल्कालायड, अमीनो एसिड, सेपोनिन, ग्लाइकोसाइड, टेनिन, वॉलेटाइल तेल, रिडेलिन, सेनेसिफाइलिन, सेनेसियोनिन, ट्राकोडेसमिन आदि।

### पारंपरिक उपयोग -

- सनइ का बारीक पाउडर खासकर महिलाओं में अत्यधिक मोटापा कम करने में मदद करता है।
- कुष्ठ रोग में सनइ की पत्तियों का लेप का उपयोग कर लाभ ले सकते हैं। साथ ही ही चोट लगने पर खुन जमाव होने पर लेप का इस्तेमाल फायदा देता है।
- सनइ फुल 2-4 ग्राम की मात्रा प्रति व्यक्ति के लिए काढा पीएं या फुल का पेस्ट बनाकर एक कप पानी में घोलकर पीएं। स्वाद के लिए चीनी या गुड मिला सकते हैं। इससे सफेद प्रदर में लाभ होता है।

- सनइ बीजों से बना काढा (हल्का गर्म) का गरारा करने से मुँह के रोगों से मुक्ति के लिए उत्तम होता है।

### 5. अनन्तमुल (*Hemidesmus indicus*)



अंग्रेजी- Indian sarsaparilla, False Sarsaparilla, Kir Magalie;

असमिया - अनन्तामुल;

बंगाली- अनन्तामुल;

गुजराती- कपुरी, उपलसारी ;

हिंदी- अनन्तमुल, कपुरी;

कन्नड - सोगाडेबेरु;

कोंकणी- उपरसल;

मलयालम- नन्नारी;

मनिपुरी-अनन्तामुल;

मराठी- उपलसारी, उपरसल ;

उड़िया- सुगुडीमालो;

संस्कृत- सारिवा, अनन्त, अस्फोट, उत्पल सारिवा, श्यामा, कनाडन, गोपी,  
गोपावल्ली ;

तमिल- ननन्नी;

तेलुगू- सुगंधी ;

### मुख्य रासायनिक घटक:

कुमेरिन, टैनिन, सैपोनिन, कार्बोहाइड्रेट, एल्कालायड - टाइलोफोरिन ( आक्षेपनाशक,  
सूजनरोधी, तीव्रगाहिता संबंधी गुण ) , ग्लुकोज़- हेमिडेसमोल, कुमेरिन,  
ओलिग्नोइड।

### पारंपरिक उपयोग -

अनन्तमुल का सेवन से खून साफ होता है और त्वचा रंगत में सुधार आती है। इसका  
जड़ ही मुख्य भूमिका में हैं। साथ ही अनपच, अस्थमा, कफ, बुखार, मेनोरहेजिया

(अत्यधिक मासिक रक्तस्राव), डिसेंट्री, जहरीले दंश का जहर काटने के लिए अनन्तमुल सहायक है।

- मुंह के अल्सर के लिए अनन्तमुल के सख्त जड़ का उपरी परत को चबाकर खाने से तुरंत राहत, शरीर पर स्थिरता और शीतलन प्रभाव पड़ता है। आंत के अल्सर में अम्ल स्राव के असामान्य होने पर अनन्तमुल बेअसर करता है।
- अनन्तमुल के जड़ का काढा मीठे स्वाद के साथ शरीर को तरोजा करती है। तेज बुखार को कम करने में मदद करता है।
- अनन्तमुल का कई प्रकार से नियमित सेवन कर सकते हैं - चुरन (½ चम्मच) बनाकर दुध के साथ ले सकते हैं या काढा में गोलकी मिलाकर पीने से बॉडी टॉनिक का काम करता है। शरीर का कम वजन, हड्डियों का कम घनत्व होना, कैंसर में भी अनन्तमुल लाभकारी है।
- अनन्तमुल एनीमिया (खुन की कमी) का विशेष उपचार करता है। बॉडी और ब्रेन टॉनिक होने के वजह से शरीर में रक्त संचार को दुरुस्त रखता है।
- अनन्तमुल के जड़ के टुकड़े या पाउडर को मधु के साथ खाने से शरीर उर्जावान और चुस्त-दुरुस्त बना रहता है।
- अनन्तमुल एक बेहतरीन ब्रेन टॉनिक है यह सीखने की क्षमता बढ़ाता है व ऐसे बच्चे जिनको सही उच्चारण में बाधा होती हो, भुलने की बीमारी, वाणी के लिए लाभदायक, आत्मकेंद्रित, डिप्रेशन, मानसिक रोगों इत्यादि में फायदेमंद है।
- अनन्तमुल के जड़ का पेस्ट दर्द वाले जोड़ों पर, आर्थराइटिस, गठिया होने पर परत लगाएं इसके ठंडक असर के साथ राहत मिलती है।

- चर्म रोग जैसे जलने का एहसास, केश-संबंधित दिक्कतों, लीवर बीमारियां जैसे पीलिया, मधुमेह, श्वास-संबंधित रोगों में फायदा देता है।
- घाव संक्रमण की सफाई व पुरुष एवं महिला प्रजनन प्रणाली में रुकावट होने पर उसे खोलता है। साथ ही गोनोर्रह्या, ल्युकोर्रहिया का सफाया करता है।
- जड़ों का एक्सट्रेक्ट (सार) सर्प दंश, बिच्छू के काटने पर जहर को बेअसर करता है और खुन का जमना व सुजन कम करता है ।
- लकवा ग्रस्त रोगियों के लिए अनन्तमुल के जड़ का काढा बिल्कुल प्रभावकारी माना गया है।

#### 6. जंगली अदरक (*Zingiber cassumunar*, *Zingiber roseum*)



अंग्रेजी- Cassumunar ginger;

असमिया - बोन अडा;

हिंदी- जंगली अदरक ;

मराठी- मालाबारी हलद;

संस्कृत- वनअरदरक;

तमिल- वनरट्टिकम;

तेलुगू- करपुस्पू;

### मुख्य रासायनिक घटक:

कंद= फेनाइलब्युटानॉइड , साक्लोहेक्सेन डेरिवेटिव, नेपथोक्विनॉन, वेनिलीन, वेनिलिक एसिड, वेराट्रिक एसिड, टरपिनॉइड, बीटा - सिटोस्टेरोल, करक्युमिनॉइड

पारंपरिक उपयोग -

- बनआदि का पेस्ट मांसपेशियों के दर्द और जोड़ों के दर्द वाले स्थान पर लगाने से राहत मिलती है।
- बनआदि का रस दिन में तीन बार पीने से सामान्य बुखार और डायरिया का इलाज है।
- लहसुन तेल की तरह बनआदि तेल बनाकर लगाने पर दर्द से राहत मिलती है।

7. चरइगोड़ (Vitex peduncularis)



अंग्रेजी- Peduncularis;

असमिया - अहुइ, अशोइ, सिला टिटा;

कछ- जधगछ, झरुआ

बंगाली- असोट;

हिंदी- थियोरगोइवा ;

कन्नड़ - नवलडि;

**मुख्य रासायनिक घटक:**

फ्लेवोनॉन, वाइटेक्सिन, पेकिपोडोल, उरसोलिक एसिड, 2 अल्फा- हाइड्रोक्सी उरसोलिक। पत्तियों में 4'एसिटोक्सी-5-हाइड्रोक्सी-6, 7- मिथोक्सिफ्लेवॉन, क्रिसिमार्टिन, जेनक्वानिन, 3 अल्फा- फ्रिडिलिनॉल। छाल में इरिडाइड, पेडंकुलारिसाइड इत्यादि।

**पारंपरिक उपयोग -**

- चरइगोइ के छाल को पानी में उबालकर पीने से सीने के दर्द में राहत मिलती है और जोड़ों के तकलीफ के लिए बेहतरीन उपाय है।
- तना या छाल का रस यदि गरमा गरम पीया जाए तो यह मलेरिया के बुखार का इलाज करता है।

- काला पानी बुखार, टायफाइड और मलेरिया के लिए चरइगोड़ की छाल, जड़ एवं पत्तियां बिल्कुल सटीक उपचार करती है। एक लीटर पानी में चरइगोड़ की कुछ सुखी पत्तियों डालकर 250 मि.ली होने तक का काढा तैयार करें। इसे छानकर दो चम्मच दिन में दो बार पिएं। इसका लाभ जल्द मिलना शुरू हो जाता है।
- छाल का पेस्ट पीलिया और आँखो तथा मुख के सुन्न होने पर के लिए उपयोगी है।
- मधुमेह व कफ-खांसी, बुखार होने पर चरइगोड़ की पत्तियां (एक या दो सुखा पत्ता) का चाय पिएं जिसका तुरंत लाभ मिलता है।

#### 8. अर्जुन (*Terminalia arjuna*)





(Image- Wikimedia)

अंग्रेजी- Arjuna ;

हिंदी- अर्जुन;

कन्नड़ - निरमट्टिट, टोरेमट्टिट, टोरेमलट्टि;

मनिपुरी- माइयोकफा;

तमिल- मरुट्टु , केला मरुथु, वेल्ला मरुट्टु;

**मुख्य रासायनिक घटक:**

टरपिनॉइड, अरसेन ट्राइटरपीनाइड, ग्लाइकोसाइड, बीटा- सिटोस्टेरोल, फ्लेवोनॉयड्स

पारंपरिक उपयोग -

- अर्जुन के छाल का पाउडर हृदय संबंधित रोगों के इलाज व लाभदायक प्रभाव के लिए बेहतरीन उपाय है। एक कप दूध में एक चम्मच छाल का पाउडर डालकर आधा कप होने तक धीमी आंच पर उबालें फिर थोड़ा ठंडा होने पर सेवन करें। या आधा कप गर्म दूध में आधा चम्मच छाल का पाउडर मिलाकर सोने से पहले पीएं।
- अर्जुन के छाल का राख सांप या बिच्छू के काटने पर इस्तेमाल होता है।
- अर्जुन के छाल का पाउडर पानी में उबालकर सुंघने से सिरदर्द में राहत मिलती है और मुख से सांस लेने पर दांत के कीड़े मर जाते हैं।
- अर्जुन के फल का पेस्ट घाव के ऊपर लगाने से संक्रमण रोकता है
- अर्जुन की पत्तियों का रस कान दर्द से छुटकारा दिलाने के लिए उपयोगी है।

- छाल का पाउडर चावल पानी के साथ लेने से पेशाब में खून आने की समस्या पर फायदेमंद है।
- अर्जुन के ताजे छाल को चबाकर खाएं और उसका रस एंटासिड (पेट में अतिरिक्त बने अम्ल को बेअसर करना) के तौर पर ले।
- माइल्ड हाइपरटेंशन में अर्जुन का उपयोग लाभकारी है। छाल का इस्तेमाल अल्सर, ल्युकोर्रहिया, मधुमेह, खून की कमी, हृदय चिकित्सा और लीवर सिरोसिस में भी लाभ देता है।

सावधानी बरतें -

- हल्के साइड इफेक्ट होते हैं जैसे उल्टी आना, गैस्ट्राइटिस, सिरदर्द, बदन दर्द, कब्ज और अनिद्रा।
- अत्यधिक मात्रा में अर्जुन का उपयोग करने से बचें।
- हृदय रोगियों को चिकित्सक से सलाह पर अर्जुन का सेवन करें और दवाइयां चलने पर सेवन करने से बचें ।
- अर्जुन का उपयोग करने पर थायराइड हार्मोन का स्तर घटाता है।

9. जरूल (*Lagerstroemia speciosa*)





अंग्रेजी- Pride of India, Queen Crape Myrtle, Banaba;

असमिया - इजार ;

बंगाली- ; डोगरी- ; गुजराती- ;

हिंदी- जरुल;

कन्नड़ - होल दाशवाल, चेल्ला;

मनिपुरी- जरोल;

मराठी- तमन ;

मिजो- थला- दो;

तमिल- कदली;

### मुख्य रासायनिक घटक:

कॉरसोलिक एसिड, ओलिएनोलिक एसिड, ट्राइटरपीन, अर्जुनोलिक एसिड, एशियाटिक एसिड, मसलिनिक एसिड, 23- हाइड्रोक्सी उरसोलिक एसिड इत्यादि।

### पारंपरिक उपयोग -

- जरुल फूल खाने से मधुमेह का इलाज, किडनी विकार, वजन कम करने,
- मुख अल्सर का उपचार
- जड़- astringent
- जरुल का बीज नशीला प्रवृत्ति का होता है।
- छाल का उपयोग पेट दर्द दूर करने में मदद मिलती है।
- हाइपरटेंशन को कम करता है।

10. अगस्त (Sesbania grandiflora)



(Source- flicker.com)

अंग्रेजी- Agati;

बंगाली- बुको , बक ; डोगरी- ; गुजराती- अगाथियो ;

हिंदी- गाछ मूंगा, अगस्ति;

कन्नड़ - अगासि, अगासे, छिन्नादारे;

मलयालम- अकट्टी ;

मनिपुरी- हुवइमल ;

मराठी- शेवरी, हतगा ;

नेपाली- अगस्ति;

उड़िया- अगस्ती;

संस्कृत- वरनरी, मुनिप्रिया, दिग्गपालक;

तमिल- सेव्वागट्टी मुनि;

तेलुगू- अविशा, इट्टागिस, सुकानासमु;

**मुख्य रासायनिक घटक:**

एल्कालायड, फ्लेवोनॉयड्स, ग्लाइकोसाइड, सैपोनिन, टैनिन, स्टेरोइड, प्रोटीन और वसा।

पारंपरिक उपयोग -

- अगस्त पौधे के सभी भागों का इस्तेमाल अनेक समस्याओं जैसे लकवा, अल्सर, रतौंधी, मोंच, फेफड़ों के सुजन इत्यादि के लिए किया जा सकता है।
- अगस्त के फूल विटामिन और मिनरल्स से भरपूर होते हैं साथ में सुजनरोधी, दर्दनाशक, रोगाणुरोधक, ज्वरनाशक के गुण पाए जाते हैं। अगस्त फूल के पकौड़े तलकर खाए जाते हैं।
- गंधारी साग, मुखा अड़खा (बेंग साग) और अगस्त के फूल सभी को मिला सब्जी बनाकर खाएं। इनका मिश्रण विशेष आहार है और सभी के औषधीय गुण आसान तरीके से सब्जी द्वारा ही मिल जाएगा।
- अगस्त के पौधे को तंबाकू और धूम्रपान करने वालों को संबंधित रोगों में शक्तिशाली मारक (एंटीडोट) के रूप में पाया गया है। फेफड़ों, किडनी और लीवर लीवर में हुए नुकसान का मरम्मत कर अगस्त पुनः स्थापित करता है।  
(Ramesh et al., 2015)

- अगस्त के जड़ को पीसकर गर्म करके सुजन वाले स्थान, बुखार और गला खराब होने पर इसका सेंक लें जल्द लाभ देता है। पत्तियों का पेस्ट का भी लेप लगा सकते हैं।
- अगस्त के सुखी पत्तियों का चाय नियमित तौर पर पी सकते हैं। इसमें जीवाणुरोधी, परजीवीरोधी, गर्भनिरोधक, ट्युमर रोधी, वजन कम करने और एंटीबायोटिक के गुण पाए जाते हैं।
- अगस्त के पत्तियों को सुखाकर पाउडर बनाकर रख लें और प्राकृतिक आइरन और फोलेट प्रतिदिन पूरक के लिए एक चम्मच खाएं इससे शरीर के हिमोग्लोबिन मात्रा में काफी सुधार आता है।
- अगस्त के पत्तियों और फुलों का काढ़ा 50-100 मि.ली पीने से ल्युकोर्रहिया और खुन की उल्टी ठीक करता है।
- अगस्त का छाल पाचन तंत्र को मजबूत रखने में सहायक है और सुजन में लेप के लिए उपयोगी है।
- अगस्त के पत्तियों का रस 10-20 मि.ली रोजाना पीने से किडनी में पथरी बनने से रोकता है।

सावधानि बरतें -

- अगस्त के पत्तियों का बहुत अधिक मात्रा में सेवन करने से बचें इससे डायरिया, चक्कर आना, उल्टी, वायु दोष, कमजोरी आदि हो सकती है।
- गर्भावस्था में अगस्त पौधे का किसी भी प्रकार से सेवन न करें।

## References

Sites: [flowersofindia.in](http://flowersofindia.in)

Biodiversity for food and nutrition: [b4fn.com](http://b4fn.com)

[Freepik.com](http://freepik.com)

Indian biodiversity portal

[Planetayurveda.com](http://Planetayurveda.com)

[tatalmg.com](http://tatalmg.com)

Site: [www.ijrap.net](http://www.ijrap.net) (ISSN:2229-3556) Hemidesmus indicus (Anantmool): A potential traditional plant with antivenom activity. Shefali Thakur et al/ Int J. Res Ayurveda Pharm 12 (3), 2021 DOI: 10.7897/2277 -4343.120384

Bauhinia purpurea : An updated Pharmacological Profile. Sumit K Arora August 2020 DOI:10.31254/jahm.2020.6213

The contents and pharmacology of Crotalaria juncea- A review. Ali Esmail-Al-Snafi July 2016

An Ethnobotanical study of medicinal plants Shahdol District of Madhya Pradesh, India. Vinay Kumar Bharti. International Journal of Science & Research ( IJSR) ISSN (Online) : 2319-7064 Vol 4 Issue 10, October 2015 site- [www.ijsr.net](http://www.ijsr.net)

Physiochemical properties & anti-microbial activity of Roselle (Hibiscus sabdariffa L.) EunKyung Jung et al. 2013 Dec. Journal Sci Food Agriculture.

Traditional Medicinal Uses, Phytochemistry, Biological Properties & Health Applications of Vitex species. Nurkhalida Kamal et al July 2022; mdpi Plants doi.org/10.3390/plants11151944

A review on *Woodfordia fruticosa* Kurz. (Dhatki) : ayurvedic, folk & modern uses. Thakur Shefali et al 2021 *जर्नल ऑफ ड्रग डिलीवरी & थेराप्यूटिक*, 2021; 11(3) : 126-131

In vitro Antipasmodic efficacy of ethanolic extract of leaves of *Sesbania grandiflora*. Akansha Jagdale et al., Apr 2021 *World Journal of Pharmaceutical Research* 9(2):915-921 DOI: 10.20959/wipr20202-16655

Synergistic- antagonistic interaction of vegetable extracts. *Acalypha indica*, *Centella asiatica* and *Sesbania grandiflora*: Wound healing, antioxidant protectivity and anti-microbial properties. Sujatha Ramasamy et al., Sep 2020 *Malaysian Journal of Microbiology* DOI: 10.21161/mjm.200792

In vitro biocompatibility and anti-microbial activities of Zinc oxide Nanoparticles (ZnO NPs) prepared by chemical and Green synthetic route- A Comparative Study. Mahalakshmi Selvaraj March 2020 *Springer BioNano Science* 10(11) DOI:10.1007/s12668- 019-00698w *International Healthcare Research Journal* 2019;3(5):161-166

Revisiting *Terminalia arjuna*- An Ancient Cardiovascular Drug. Shridhar Dwiwedi and Deepti Chopra  
*J Tradit Complement Med* 2014 Oct- Dec; 4(4): 224-231.  
DOI:10.4103/2225-4110.139103

A review of *Lagerstroemia speciosa*: Pride of India. A.M Deshpande et al 2018. Vol 9 No. 10 (2018) pg no 20181-20185

*Lagerstroemia speciosa* Ameliorated Blood pressure in LNAME Induced Hypertension in experimental rats through NO/cGMP and Oxidative Stress Modulation. Md S. Aleissa 2022 Oct. Biomed Research International Article I'd 5894416.



आलेख -

सुश्री नीतू साक्षी टोप्पो

एम.एससी (बायोटेक्नोलॉजी)

डिबडीह, राँची।